

प्रेषक,

श्री राजेन्द्र कुमार
अपर सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

अपर प्रमुख वन संरक्षक एवं नोडल अधिकारी,
वन संरक्षण,
उत्तराखण्ड, देहरादून।

वन एवं पर्यावरण विभाग

देहरादून: दिनांक 05 ^{सितम्बर} अगस्त, 2013.

विषय:- जनपद-नैनीताल में प्राचीन सिद्धदात्री माँ जगदम्बे के (पीट टीट देवी) मन्दिर एवं धर्मशाला के निर्माण हेतु 0.40 हे० वन भूमि का गैर वानिकी कार्यों हेतु ग्राम पंचायत, महरौड़ा को 30 वर्षों की लीज पर दिया जाना

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या: 273/1जी-3541 (नैनी०) दिनांक 31-07-2013 के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल महोदय जनपद-नैनीताल में प्राचीन सिद्धदात्री माँ जगदम्बे के (पीट टीट देवी) मन्दिर एवं धर्मशाला के निर्माण हेतु 0.40 हे० वन भूमि का गैर वानिकी कार्यों हेतु ग्राम पंचायत, महरौड़ा को 30 वर्षों की लीज पर दिये जाने की स्वीकृति भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के पत्र संख्या-8बी/यू.सी.पी./09/62/2012/एफ०सी०/कैम्प/6 दिनांक 23-07-2013 में प्रदत्त स्वीकृति के आधार पर उसमें उल्लिखित शर्तों का समावेश करते हुए निम्न शर्तों पर प्रदान करते हैं:-

1. प्रश्नगत वन भूमि की वर्तमान वैधानिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होगा।
2. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा प्रश्नगत वन भूमि का उपयोग केवल कथित प्रयोजन हेतु ही किया जायेगा तथा उक्त भूमि अथवा उसके किसी भाग को किसी अन्य विभाग, संस्था अथवा व्यक्तियों को हस्तान्तरित नहीं किया जायेगा।
3. प्रयोक्ता एजेन्सी के सम्बन्धित अधिकारी, कर्मचारी अथवा ठेकेदार या उक्त व्यक्तियों के अधीन या उनसे सम्बन्धित कोई भी व्यक्ति किसी भी वन सम्पदा को क्षति नहीं पहुँचायेगा और यदि उक्त व्यक्तियों द्वारा वन सम्पदा को कोई क्षति पहुँचायी जाती है, अथवा कोई क्षति पहुँचती है तो उसके लिए सम्बन्धित प्रभागीय वनाधिकारी द्वारा तदर्थ निर्धारित प्रतिकर, जो पूर्णतया अन्तिम एवं प्रयोक्ता एजेन्सी पर बाध्यकारी होगा, प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा देय होगा।
4. उक्त वन भूमि प्रयोक्ता एजेन्सी के उपयोग में लीज अवधि के अन्दर तब तक बनी रहेगी, जब तक कि प्रयोक्ता एजेन्सी को उसकी उक्त प्रयोजन हेतु आवश्यकता रहेगी। यदि प्रयोक्ता एजेन्सी को उक्त वन भूमि अथवा उसके किसी भाग की आवश्यकता न रहेगी तो यथास्थिति उक्त वन भूमि अथवा उसका ऐसा भाग जो प्रयोक्ता एजेन्सी के लिए आवश्यक न रहे, मूल विभाग को बिना किसी प्रतिकर के भुगतान किये यथास्थिति वापस प्राप्त हो जायेगी।
5. वन विभाग के कर्मचारी/अधिकारी अथवा उसके अभिकर्ताओं को किसी भी समय जब वे आवश्यक समझें, प्रश्नगत वन भूमि का निरीक्षण करने का अधिकार होगा।
6. सम्बन्धित वन क्षेत्र में परियोजना में कार्य करने वाले मजदूर तथा कर्मचारी अपनी ईंधन की आवश्यकता के लिए वनों को हानि न पहुँचायें, इसके लिए प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा उन्हें ईंधन की लकड़ी अथवा अन्य ईंधन सामग्री की आपूर्ति की जायेगी।
7. प्रस्तावित वन भूमि में वृक्षों का पातन केवल अपरिहार्य परिस्थितियों में ही वन विभाग की पूर्वानुमति से उत्तराखण्ड वन विकास निगम के माध्यम से किया जायेगा।
8. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा यह सुनिश्चित किया जायेगा कि प्रत्यावर्तित वन भूमि पर किसी प्रकार का अतिक्रमण न होने दिया जाये।

9. प्रयोक्ता एजेन्सी के व्यय पर वन विभाग द्वारा 100 वृक्षों का वृक्षारोपण एवं 10 वर्षों तक रख-रखाव किया जायेगा।
 10. प्रयोक्ता एजेन्सी के व्यय पर वन विभाग द्वारा प्रस्तावित कार्यस्थल के आस-पास रिक्त पड़े स्थानों यथोचित वृक्षारोपण एवं 10 वर्षों तक रख-रखाव किया जायेगा।
 11. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा क्षतिपूरक वृक्षारोपण व आस-पास रिक्त स्थानों पर वृक्षारोपण हेतु जमा करायी धनराशि तदर्थ कैम्पा कोष को प्रेषित की जा चुकी है।
 12. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा जनपद कार्यबल की संस्तुतियों एवं भू-वैज्ञानिक के सुझावों का कड़ाई से अनुपालन पालन किया जायेगा।
 13. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा प्रस्तावित योजना के निर्माण एवं तदुपरान्त रख-रखाव के दौरान स्थानीय वनस्पतियों एवं जीव जन्तुओं को कोई नुकसान नहीं पहुँचायी जायेगी।
 14. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा प्रस्तावित वन भूमि को अतिरिक्त आस-पास की वन भूमि से निर्माण में मिट्टी/पत्थर काटने एवं भरने का कार्य नहीं किया जायेगा।
 15. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा परियोजना निर्माण में कार्यरत मजदूरों/स्टाफ को रसोई गैस/किरोसिन तेल की आपूर्ति की जायेगी, जिससे निकटवर्ती वनों पर जैविक दबाव को कम किया जा सके।
 16. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा प्रस्तावित स्थल/वन क्षेत्र के आस-पास मजदूरों/स्टाफ के लिए किसी प्रकार का कैम्प नहीं लगाया जायेगा।
 17. प्रयोक्ता एजेन्सी के व्यय पर मक डिस्पोजल कार्ययोजना के अनुसार वन विभाग की देख-रेख में किया जायेगा।
 18. प्रयोक्ता एजेन्सी के द्वारा एन0पी0वी0, 100 वृक्षों का वृक्षारोपण एवं कार्यस्थल के आस-पास रिक्त स्थानों पर वृक्षारोपण हेतु जमा की गई धनराशि को भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के स्तर पर गठित तदर्थ क्षतिपूरक वृक्षारोपण निधि प्रबन्ध एवं नियोजन एजेन्सी (ad-hoc CAMPA) को स्थानान्तरित कर दिया गया है।
 19. प्रश्नगत वन भूमि का वर्तमान बाजार दर पर जिलाधिकारी से मूल्य निर्धारित कराकर, मूल्य के बराबर प्रीमियम एवं प्रीमियम का दस प्रतिशत वार्षिक लीज रेंट लेकर प्रयोक्ता एजेन्सी को वनभूमि का कब्जा दिया जायेगा।
 20. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा प्रस्ताव में निहित किसी भी निर्धारित शर्त का अनुपालन नहीं होने अथवा असंतोषजनक अनुपालन होने की स्थिति में भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा स्वीकृति को निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित है।
 21. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा उक्त शर्तों एवं अन्य सामान्य शर्तों को सम्मिलित करते हुए एक पट्टा विलेख का आलेख्य प्रस्तुत किया जायेगा जिसे शासकीय हस्तान्तरक से विधीक्षित करवाया जायेगा। ऐसे पट्टा विलेख के विधीक्षण हेतु न्याय (कन्वेयसिंग) कोष्टक के शासनादेश सं0-198/7-जी.सी.-89-3-89, दिनांक 19-6-1989 के अनुसार निर्धारित विधीक्षण शुल्क विलेख विधीक्षण से पूर्व लेखा शीर्षक "0070"-अन्य प्रशासनिक सेवायें-01-न्याय प्रशासन-501-सेवायें और सेवा फीस-01 की गई सेवाओं के लिये भुगतानों की उगाही के अन्तर्गत ट्रेजरी में जमाकर ट्रेजरी चालान की प्रति पट्टाविलेख के आलेख्य के साथ उपलब्ध करायी जायेगी। उपरोक्तानुसार प्रस्तुत पट्टा विलेख शासन द्वारा विधीक्षित किये जाने के उपरान्त ही शासन द्वारा अधिकृत प्राधिकारी द्वारा निष्पादित किया जायेगा।
 22. प्रयोक्ता एजेन्सी के व्यय पर प्रत्यावर्तित वन भूमि पर आर0सी0सी0 पिलरों से (फोर बियरिंग व बैक बियरिंग लेकर) सीमांकन किया जायेगा, जिसे सम्बन्धित प्रभागीय वनाधिकारी के स्तर पर वन भूमि हस्तान्तरण के अभिलेखों में भी अंकित किया जायेगा।
2. उक्त आदेश उत्तराखण्ड शासन द्वारा जारी कार्यालय झाप सं0-104/26/प्र0स0-आ0व0प्रा0वि0 दि0-1-1-2001, कार्यालय झाप सं0-110/26/प्र0स0-आ0व0प्रा0वि0 दि0-4-1-2001, शासनादेश संख्या-6450/14-3-930/77 दिनांक 2-7-1979 एवं शासनादेश संख्या-156/7-1-2005-500(826)/2002 दिनांक 9-9-2005 के द्वारा प्रदत्त अधिकारों के अन्तर्गत जारी किये जा रहे हैं।

२१

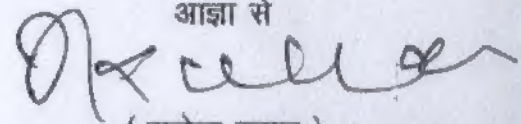
भवदीय,

(राजेन्द्र कुमार)
अपर सचिव।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. अपर प्रमुख वन संरक्षक (केन्द्रीय), भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, केन्द्रीय भवन, सैक्टर-एच, पंचम तल, अलीगंज, लखनऊ।
2. प्रमुख सचिव, वित्त विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
3. महालेखाकार, लेखा एवं हकदारी, उत्तराखण्ड, देहरादून।
4. वन संरक्षक, दक्षिणी कुमाऊँ वृत्त, नैनीताल।
5. जिलाधिकारी, जनपद-नैनीताल।
6. प्रभागीय वनाधिकारी, नैनीताल वन प्रभाग, नैनीताल।
7. प्रधान, ग्राम-पंचायत, महरौड़ा, जनपद-नैनीताल।
8. निदेशक, राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, (NIC) उत्तराखण्ड सचिवालय, देहरादून को इस आशय से प्रेषित कि कृपया इस शासनादेश को एन.आई.सी. की वेबसाइट पर अपलोड करने का कष्ट करें।

ज

आज्ञा से

(राजेन्द्र कुमार)
अपर सचिव।